B-2
L-22
Modern India

16/01/2024

गांधीजी के तीन स्थानीय प्रयोगों के निहितार्थ

• गांधीजी ने 1915 में भारत वापसी के बाद पहले दो वर्ष भारतीयों की मनोदशा और भारतीय परिस्थितियों को समझना और फिर चम्पारण, अहमदाबाद व खेड़ा जैसे स्थानीय मुद्दों पर सफल सत्याग्रह किया। इन प्रयोगों की सफलता ने गांधी के नेतृत्व की स्वीकार्यता को सहज बना दिया और निम्नलिखित आधार पर इन प्रयोगों के निहितार्थ को समझा जा सकता है:-

(i) दक्षिण अफ्रीकी सफलता के बाद भारतीय परिस्थितियों में भी सत्याग्रह की रणनीतिक सफलता ने न सिर्फ गांधी के आदर्शों व प्रयोगों को प्रभावी साबित किया बल्कि सत्याग्रह व अहिंसा जैसे आदर्शवादी मूल्यों को व्यवहार में उतारकर अंग्रेजों जैसी शोषण-कारी सत्ता को न्याय के लिए मजबूर कर देना

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

लोगों का विश्वास गांधी के नेतृत्व में बढ़ाने लगा।

(ii) उल्लेखनीय है कि किसी भी आंदोलन की सफलता का एक महत्वपूर्ण आयाम यह होता है कि जनता अपने नेता पर कितना विश्वास कर रही है और उसे किस नजरिए से देख रही है। इन प्रयोगों की सफलता ने लोगों में यह विश्वास मजबूती से जगाया कि गांधी के नेतृत्व में निश्चित ही उन्हें सफलता मिलेगी।

(iii) इन्हीं प्रयोगों के दौरान गांधी को डा० राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, महादेव देसाई, मजहरुल-उल-हक तथा सरदार पटेल जैसे अनुयायियों का साथ मिला जिन्होंने गांधी के आंदोलनों में न सिर्फ सक्रियता से भाग लिया, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में गांधीवादी रणनीतियों में अपना विश्वास बनाए रखा।

(iv) इन प्रयोगों से गांधी ने किसानों और जमिकों

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

के विषयों को उठाकर भारत की वास्तविक समस्या को चर्चित बना दिया और अब राष्ट्रीय आंदोलन उन वर्गों से जुड़ गया जहाँ अभी तक कोई प्रमुख नेता या आंदोलन प्रभावी तरीके से नहीं पहुँच सका था वस्तुतः इन प्रयोगों के फलस्वरूप हमारे संघर्ष का स्वरूप राष्ट्रीय रूप धारण करने लगा क्योंकि अब गाँव, किसान व श्रमिक अब राष्ट्रीय संघर्ष की मुख्यधारा से जुड़ गया।

(v) चम्पारण व अन्य स्थानीय प्रयोगों में जिस तरह गाँधी ने भारतीय संस्कृति व मूल्यों को राजनैतिक प्रयोग के तौर सफल कर दिखाया उससे उन्हें बापू व महात्मा की उपाधि मिली और मोहनदास से महात्मा का रूपांतरण गाँधीवादी नेतृत्व की स्वीकार्यता की एक बड़ी जीत थी। इसीलिए गाँधी के आंदोलनों में भाग लेना राजनीति से अधिक

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

सांस्कृतिक समारोह में भाग लेने जैसा हो गया। यह भी एक प्रमुख कारण था कि गांधीवादी आंदोलनों में महिला सहभागिता बढ़ती गयी।

- निष्कर्षतः इन तीन स्थानीय प्रयोगों ने राष्ट्रीय आंदोलन में गाँधी के नेतृत्व को निर्विवादित रूप से लोकप्रिय बना दिया और यह भी तय कर दिया कि औपनिवेशिक सत्ता से अब लड़ाई का मुख्य आधार अब जनांदोलन होगा तथा सत्याग्रह व अहिंसा जैसे मूल्य आधारित प्रयोगों से राष्ट्रीय संघर्ष लड़ा जाएगा।

गाँधीजी की विचारधारा

1. राजनैतिक (राज्य के बारे में विचार) :-

a) • दार्शनिक पक्ष से गाँधी राज्य के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे क्योंकि उनका

KGS IAS

मानना था कि क्योंकि राज्य में आत्मा नहीं होती अतः उसे हिंसा से अलग भी नहीं किया जा सकता अर्थात् "राज्य हिंसा का सार है।"

- गांधी ने यह भी स्पष्ट कहा कि राज्य के आदेशों से हृदय की आवाज सदैव महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि यह नैतिक, अहिंसक व सहकारात्मक होती है जबकि राज्य के कानून इस दृष्टिकोण से अत्याचारी होते हैं कि उसके पालन के लिए व्यक्ति को मजबूर किया जाता है।

b) आदर्श राज्य के रूप में गांधी रामराज्य की संकल्पना देते हैं और यह एक ऐसी स्थिति होगी जब सभी व्यक्ति आत्मानुशासित, आत्मनियंत्रित व स्वयंसेवित की भावना से पूर्ण हो और ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति किसी भी अन्य व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचाएगा, पड़ोसी ही पड़ोसी का रक्षक

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

होगा और ऐसे में बाहरी कानूनों की आवश्यकता नहीं होगी।

c) व्यवहारिक आधार पर गांधीजी ने विकेन्द्रीकरण का समर्थन किया और ग्रामस्वराज को शक्तिशाली बनाने तथा पंचायतों की सहायता से सभी लोगों को सहयोगात्मक कार्यों का प्रशिक्षण देकर सभी की राजनैतिक भागीदारी सुनिश्चित करने का विचार रखा और कहा कि जन शासन में सभी की भागीदारी सुनिश्चित होगी तो वही सुशासन कहलाएगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- उल्लेखनीय है कि गांधी की प्रेरणा से ही अनुच्छेद 40 में ग्राम पंचायत की बात स्वीकारी गयी और 73 वें एवं 74 वें संविधान संशोधन के द्वारा पंचायती राज को व्यापक तौर पर अपना लिया गया।

2. आर्थिक विचार :-

a) स्वदेशी :- गांधी ने स्वदेशी को परम मूल्य के रूप में स्वीकारा और इसे आत्म-निर्भरता व स्वावलम्बन का पर्याय माना। उनके अनुसार, यदि स्वदेशी पर पूर्ण विश्वास हो जाए तो किसी अन्य की गुलामी बर्दाश्त ही नहीं की जा सकती। वस्तुतः गांधी ने स्वदेशी को अंग्रेजों के विरुद्ध न सिर्फ आर्थिक बल्कि नैतिक व मनोवैज्ञानिक बल के रूप में भी देखा।

b) श्रम की महत्ता :- गांधीजी ने किसी भी व्यक्ति की वास्तविक सम्पत्ति श्रम को माना और उनको स्पष्ट कहा कि बिना श्रम किए व्यक्ति एक समय के भोजन का भी अधिकारी नहीं है।

- गांधी ने सभी व्यक्तियों के श्रम का मूल्य समान बताया चाहे वह वकील हो या नाई।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

गांधी इस विचार से लोगों को अपने कर्म के प्रति सम्मान व निष्ठा रखने का संदेश देते हैं।

c) लघु व कुटीर उद्योग:- गांधीजी ने भारत में मानव संसाधन की प्रचुर उपलब्धता के आधार पर मशीनीकरण का विरोध किया क्योंकि यह भारत में बेरोजगारी को जन्म दे सकती थी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि कुटीर उद्योगों में रोजगार उपलब्ध कराने की असीम संभावना है। यहां स्पष्ट हो जाना चाहिए कि गांधी मशीनों के नहीं, बल्कि मशीनीकरण के विरोधी थे।

d) ट्रस्टीशिप का सिद्धांत:- गांधीजी की आर्थिक विचारधारा का वास्तविक प्रतिनिधि उनका ट्रस्टीशिप सिद्धांत है, जिसके अनुसार, व्यक्ति अपनी आवश्यकता की सम्पत्ति का तो स्वामी माना जा सकता है किन्तु उससे अतिरिक्त पूँजी का उसे ट्रस्टी माना जाना चाहिए जिससे

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

वह सामाजिक- आर्थिक कल्याण कार्यक्रम में लगा सके। गांधी ने इसके लिए हृदय परिवर्तन को आवश्यक माना।

इस विचार के द्वारा गाँधी ने राज्य की केन्द्रीय भूमिका समाजवाद, सर्वहारा की तानाशाही, साम्यवाद तथा योग्यता के अनुसार निजी सम्पत्ति की छूट, पूँजीवाद के विचारों से आगे बढ़ते हुए एक नैतिक व मौलिक दर्शन प्रस्तुत किया और कहा कि उत्पादन के साधन भले ही निजी हाथों में हो लेकिन वितरण व उपभोग सभी के लिए सुनिश्चित हो।

• ट्रस्टीशिप सिद्धांत को कई विद्वानों ने मात्र कितबी सिद्धांत माना किन्तु स्वयं गाँधी ने तथा आचार्य विनोबा भावे व जयप्रकाशनारायण जैसे उनके अनुयायियों ने

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इसे व्यवहारिक रूप से सफल कर दिखाया। इसका श्रेष्ठ उदाहरण भूदान आंदोलन है। अतः ट्रस्टीशिप का सिद्धांत कठिन तो है परन्तु असंभव व मात्र किताबी नहीं है।

- आज कई एनजीओ इस दिशा में कार्य कर रहे है और कारपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (CSR) की प्रेरणा भी ट्रस्टीशिप सिद्धांत से जुड़ती दिखती है। 21वीं सदी में जब पूंजीवाद व समाजवाद जैसी व्यवस्थाएँ असमानता को मिटाने में असफल रही है तो गाँधी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत एक आशावादी विकल्प प्रस्तुत करता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

प्रश्न :- क्या नेहरू गांधी की भाषा बोलते थे?